7

पतरस ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया

''पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

पतरस को यीशु के पास उसका भाई अंद्रियास लाया था (यूहन्ना 1:40, 41)। यूहन्ना का चेला होने के कारण (यूहन्ना 1:35), अंद्रियास को पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का तैयारी का बपतिस्मा दिया गया था। वह यूहन्ना से यीशु के बारे में जानने के बाद पतरस को उसके पास लाने के लिए उतावला था (यूहन्ना 1:35-42); बहुत अधिक सम्भावना है, कि उसने पतरस को यूहन्ना का संदेश भी बताया होगा। पतरस भी पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे को अच्छी तरह जानता होगा। उसने वह बपतिस्मा लिया होगा जिसका प्रचार यूहन्ना कर रहा था (लूका 3:3)। यीशु के अनुयायी बपतिस्मा लेकर उसके चेले बन गए थे (यूहन्ना 4:1)। बहुत अधिक सम्भावना है कि पतरस को यीशु का चेला बनने पर बपतिस्मा दिया गया था (लूका 6:13, 14)।

पतरस ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया

पतरस यीशु के प्रेरितों तथा चेलों में से मुख्य रूप से उभरकर सामने आया था। प्रेरितों की सभी सूचियों में उसका नाम सबसे पहले मिलता है (मत्ती 10:2; मरकुस 3:16; लूका 6:14; प्रेरितों 1:13)। बेशक यीशु के पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के बाद, उसने यीशु के अनुयायियों में जल्द ही प्रमुख स्थान बना लिया था (प्रेरितों 1:15; 2:14, 37), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि पतरस को शेष प्रेरितों से अधिक अधिकार मिल गया था। इसका अर्थ केवल इतना ही है कि यीशु ने कलीसिया के आरम्भिक दिनों में पतरस को नेतृत्व की भूमिका निभाने को दी थी। यीशु ने कहा था कि जो वह और दूसरे प्रेरित बांधेंगे और खोलेंगे वही ''स्वर्ग में बंधेगा'' और ''खुलेगा'' (मत्ती 16:19; 18:18)। NASB में यह संकेत देते हुए कि प्रेरितों ने अपनी ओर से बांधना और खोलना *नहीं* था, बल्कि उन्होंने वही बांधना और खोलना था जो स्वर्ग में पहले से ही बांधा व खोला गया था। बड़ी ही ईमानदारी से इन

आयतों में यूनानी पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत प्रस्तुत किया गया है।

यीशु ने जब अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बाद प्रेरितों को सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा, तो पतरस वहां था और उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था कि आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। यीशु ने उन्हें बताया:

> कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:18, 19)।
>
> जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:16)।
>
> और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा (लूका 24:47)।

अन्य प्रेरितों के साथ, पतरस ने पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पाने के लिए यरूशलेम में प्रतीक्षा की (लूका 24:49; प्रेरितों 1:4-8)। जिसने उन्हें यीशु की सब बातें स्मरण करवाने में सहायक होना था (यूहन्ना 14:26) और सब सत्य में उनकी अगुआई करनी थी (यूहन्ना 16:13)। उन्होंने यरूशलेम में यीशु की गवाही देकर सुसमाचार को शेष संसार में ले जाना था (प्रेरितों 1:8)। इस प्रकार तैयार होकर पतरस (और अन्य प्रेरित) दूसरे लोगों पर यीशु की शिक्षा सही-सही प्रकट कर पाए थे।

यरूशलेम में

पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2:1), यरूशलेम में (प्रेरितों 2:5) पतरस ने संसार के इतिहास में पहली बार *यीशु मसीह के नाम में* पापों की क्षमा का प्रचार किया था (लूका 24:47)। बाद में सुसमाचार शेष संसार में सुनाया जाना था (प्रेरितों 1:8)। पतरस को यीशु की बात समझ आ गई थी कि उसने आकाश और पृथ्वी पर सारे अधिकार की बात इसलिए कही थी (मत्ती 28:18) क्योंकि उसने शीघ्र ही परमेश्वर के दाहिने हाथ शक्ति पानी थी (प्रेरितों 2:33; 1 पतरस 3:22), जहां उसने प्रभु और मसीह बनकर अपना काम आरम्भ करना था (प्रेरितों 2:36)। अपने पहले प्रवचन में पतरस ने अपने यहूदी श्रोताओं को ये बातें समझाने की कोशिश की और उन पर अपने मसीहा को ही क्रूस पर चढ़ाने का दोष लगाया (प्रेरितों 2:33-36)। उसने अपनी बात यह कहकर समाप्त की कि यीशु ही प्रभु और मसीह है।

इस घोषणा से उनके हृदय छिद गए जो इस बात का संकेत भी था कि उन्होंने पतरस की यह बात कि यीशु प्रभु और मसीह भी है, मान ली थी। *यीशु* में प्रभु और *मसीह* में विश्वास करने का अर्थ उसके लहू द्वारा (इब्रानियों 10:19, 20) और उसे स्वामी और राजा जानकर उसके आगे समर्पण करके (लूका 6:46) उसके नाम में पापों की क्षमा की इच्छा करना था (प्रेरितों 4:12)।

नया मार्ग

पतरस ने यह कहकर क्षमा के इस नये मार्ग की पेशकश की: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। NIV के प्रथम संस्करण में इस प्रकार से कहा गया है, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले ताकि तुम्हारे पाप क्षमा किए जाएं और तुम पवित्र आत्मा का दान पाओ।''

पापों की क्षमा

कई लोगों द्वारा सिखाया गया है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा एक शर्त नहीं है, और अन्य यह दावा करते हैं कि यह समझना आवश्यक नहीं है कि बपतिस्मा लेते समय किसी के पाप क्षमा हो रहे हैं। इससे पहला विचार एक थियोलोजी के कारण लिया जाता है कि उद्धार केवल विश्वास से ही होता है। दूसरा विचार इस थियोलोजी पर आधारित है यदि कोई इसलिए बपतिस्मा ले रहा है कि उसके पाप क्षमा किए जाएंगे, तो वह आज्ञा मानने के बजाय एक प्रतिज्ञा को मानने की कोशिश कर रहा है।[1] इसलिए यह सिखाया जाता है कि यह समझने की आवश्यकता नहीं है कि बपतिस्मा लेते समय पाप क्षमा हो रहे होते हैं।

यदि कोई पानी से अपने पाप उसी प्रकार धोने की कोशिश करे जैसे वह अपने शरीर से गंदगी को धोता है, तो वह अपने पापों को मिटाने के लिए बपतिस्मे को एक कार्य बनाना चाह रहा होगा अर्थात एक ऐसा कार्य जिसके विषय में बाइबल हमें सिखाती है कि वह उद्धार नहीं दिला सकता है (इफिसियों 2:8)। दूसरी ओर, यदि कोई अपने पापों को धोने के लिए यीशु मसीह में विश्वास के कारण बपतिस्मा लेने के लिए तैयार होता है,[2] तो उसका बपतिस्मा धार्मिकता का काम नहीं (तीतुस 3:5), बल्कि परमेश्वर के काम में विश्वास का एक कार्य है जिसने यीशु को मुर्दों में से जिलाया था (कुलुस्सियों 2:12)। इस दृष्टिकोण से बपतिस्मा मनुष्य का काम नहीं है जिससे पाप मिटते हों, बल्कि यह उसके पापों को मिटाने के लिए यीशु के लहू की धोने वाली सामर्थ में विश्वास करके उसकी बात मानना है।

यीशु के नाम में क्षमा

पतरस के प्रचार से लाई गई यीशु में विश्वास की बात ने लोगों को यह पूछने के लिए प्रेरित किया, ''हम क्या करें?'' पतरस ने उन्हें बताया कि क्या करना है। उसका वचन ग्रहण

करने (प्रेरितों 2:41) का अर्थ था कि वे यीशु को मसीहा के रूप में मानें, अपने मार्गों को सीधा करें और पापों की क्षमा के लिए यीशु के नाम में बपतिस्मा लें।

पतरस का उन्हें ''मन फिराने'' के लिए कहने का अर्थ था कि वे समझें कि उनके पाप ही उनकी समस्या थे, और ''अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले (ने)'' का अर्थ था कि उन्हें समझ आ जाए कि यीशु की ओर से उन्हीं को धोया जाना था जिन्होंने मन फिराकर बपतिस्मा लिया था। मन फिराने के बाद बपतिस्मा लेने को यीशु में इन प्रथम परिवर्तितों द्वारा किसी के भी इससे अलग ढंग से समझने की बात का उल्लेख नये नियम में नहीं है। जो कुछ उनमें प्रचार किया गया वही प्रचार बाद के सुनने वालों में किया जाना था (लूका 24:47), जिसका अर्थ यह है कि जहां भी यह संदेश सुनाया जाना था, वहां क्षमा के लिए यही शर्तें होनी थीं।

मन फिराना और बपतिस्मा दोनों ही ''पापों की क्षमा के लिए'' थे। पतरस ने यह नहीं कहा कि, ''मन फिराओ ताकि तुम्हारे पाप क्षमा हो जाएं और बपतिस्मा लो *क्योंकि* तुम्हारे पाप *पहले ही* क्षमा हो चुके हैं।'' ''पापों की क्षमा के लिए'' का सम्बन्ध ''मन फिराने'' और ''बपतिस्मा लेने'' के बराबर माना जाता है। जो उद्देश्य मन फिराने से जुड़ा है वही बपतिस्मा लेने से भी जुड़ा हुआ है। यदि उन्हें इसलिए मन फिराना था कि उनके पाप क्षमा हो सकें, तो उन्हें बपतिस्मा इसलिए लेना था ताकि उनके पाप क्षमा हो सकें। यदि उन्हें बपतिस्मा इसलिए लेना था कि उनके पाप पहले ही क्षमा हो चुके हैं, तो उन्हें मन फिराना आवश्यक था क्योंकि उनके पाप पहले ही क्षमा हो चुके थे। समुच्य बोधक ''और'' ''मन फिराओ'' और ''बपतिस्मा लो'' को ''पापों की क्षमा'' के एक ही उद्देश्य से मिलता है। वे एक उद्देश्य के लिए मन फिराकर दूसरे उद्देश्य के लिए बपतिस्मा नहीं ले सकते थे; मन फिराना और बपतिस्मा लेना एक ही उद्देश्य के लिए था।

न्यूमैन और निदा ने लिखा कि *''ताकि तुम्हारे पाप क्षमा किए जाएं''* (मूलत: ''अपने पापों की क्षमा में'') ''*अपने पापों से मुड़ो* और *बपतिस्मा लो* दोनों मुख्य क्रियाओं में सुधार करता है।''[3]

वाक्यांश ''पापों की क्षमा के लिए'' में ''के लिए'' के स्थान पर यूनानी शब्द *eis* है जिसका अंग्रेज़ी में मुख्य अर्थ into अर्थात *में* है। इस पद में विदता का दबाव सही है ''with a view to, or resulting in अर्थात अन्तिम या निरन्तर'' के रूप में *eis* का समर्थन करता है।[4]

ओपके ने ''consecutive and final *eis*'' के शीर्षक के अन्तर्गत *eis* (प्रेरितों 2:38) का नाम दिया। उसने कहा, ''उपसर्ग किसी कार्य की विशेष उद्देश्य तक दिशा जाहिर करता है।'' बाद में उसने जोड़ा कि, ''*eis* का अन्तिम बल यहां तक बढ़ जाता है कि सम्बद्ध उपसर्गीय अभिव्यक्ति एक स्वतन्त्र क्रिया विशेषण बन जाती है।'' इसके अन्य उदाहरणों के साथ वह प्रस्तुत करता है, ''यूहन्ना बपतिस्मा देता है, और यीशु पापों की क्षमा के लिए अपना लहू बहाता है (मरकुस 1:4; लूका 3:3; मत्ती 26:28; तु. प्रेरितों 2:38)।''[5]

थेयर ने ''the end which a thing is adapted to attain'' शीर्षक में eis के साथ

बपतिस्मे को जोड़ा है।[6] उसके शब्दकोष में पाठक को बपतिस्मे पर उपपद की ओर ले जाया जाता है, जहां प्रेरितों 2:38 का अनुवाद ''पापों की क्षमा पाने के लिए ...'' किया गया है।[7]

बाउर, गिंगरिच और डेंकर ने ''to denote the goal'' शीर्षक और ''to denote purpose *in order to*'' उप शीर्षक से प्रेरितों 2:38 में *eis* दिया है। फिर उन्होंने इस वाक्यांश का अनुवाद जैसे यहां और अन्य पदों में किया है *''पापों की क्षमा के लिए, ताकि पाप क्षमा किए जाएं* मत्ती 26:28; तु. मरकुस 1:4; लूका 3:3; प्रेरितों 2:38.''[8]

मत्ती 26:28 में ''पापों की क्षमा के निमित्त'' वही वाक्यांश है जिसका सम्बन्ध बपतिस्मे से है (मरकुस 1:4; लूका 3:3; प्रेरितों 2:38)। यदि यीशु हमारे लिए पापों की क्षमा, ''के लिए'' (*eis*), *पाने के लिए,* मरा, तो हमारे लिए भी उसके द्वारा प्रदत्त क्षमा *को पाने के* ''लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लेना आवश्यक है, क्योंकि ''पापों की क्षमा के लिए'' वाक्यांश में इन आयतों वाले यूनानी शब्द ही हैं। परन्तु, यदि इस वाक्यांश में *eis* का अर्थ *क्योंकि है,* तो न केवल हमारे लिए बपतिस्मा लेना इसलिए आवश्यक है *क्योंकि* हमारे पाप पहले ही क्षमा किए जा चुके हैं बल्कि यीशु ने भी अपना लहू इसलिए बहाया क्योंकि हमारे पाप पहले ही क्षमा किए जा चुके हैं। यदि पाप क्षमा करने के कार्य करने से पहले ही क्षमा किए जा चुके हैं तो इस व्याख्या का अर्थ यह होगा कि एक खोखले संस्कार की तरह उसकी मृत्यु भी व्यर्थ में लहू बहाना है। यीशु किसी कारण से मरा, इसलिए eis के इस्तेमाल से ही समझा जा सकता है कि इसका अभिप्राय तथा उद्देश्य क्या है।

यीशु विवेकपूर्ण, जानते हुए, इच्छापूर्वक पापों की क्षमा ''के लिए'' (*eis*) मरा। वह यह जानता था और उसे समझ भी थी कि वह हमारे पापों की क्षमा ''के लिए'' (eis) अपना लहू बहा रहा है; इसलिए यदि हम पापों की क्षमा ''के लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लेते हैं, तो इसका अर्थ है कि हमें भी पता और समझ होनी आवश्यक है कि हम किस उद्देश्य के लिए बपतिस्मा ले रहे हैं। यदि *eis* का अर्थ यह है कि यीशु किसी ज्ञात उद्देश्य *के लिए* अपना लहू बहा रहा था, तो इसका अर्थ है कि हमें किसी ज्ञात उद्देश्य *के लिए* बपतिस्मा लेना चाहिए। कोई बहस कर सकता है कि मत्ती 26:28 में *eis* इस तथ्य को व्यक्त नहीं करता कि यीशु जानता था कि उसके लहू बहाने का उद्देश्य क्या था? बपतिस्मे से सम्बन्धित उसी वाक्यांश का इस्तेमाल किया गया है तो क्या इसका अर्थ यह नहीं कि *eis* इस तथ्य को व्यक्त करता है कि हमें *पता होना* चाहिए कि हम किस उद्देश्य के लिए बपतिस्मा ले रहे हैं।

प्रेरितों 2:5, 37, 38 में दिए गए पतरस के निर्देश के कारण यहूदियों को समझ आ गई थी कि उनका बपतिस्मा लेने का क्या उद्देश्य है। नई वाचा में प्रथम परिवर्तितों के रूप में, उन्होंने सब जातियों की आने वाली सब पीढ़ियों के लिए एक नमूना ठहरा दिया। यदि वे जानते थे कि उन्हें पापों की क्षमा *पाने के लिए* बपतिस्मा लेना था, तो हमें भी अपने पापों की क्षमा पाने के लिए उसी सच्चाई को समझना ज़रूरी है। सही अभिप्राय तथा उद्देश्य के बिना किया गया कार्य उसे करने में असफलता की तरह ही आज्ञा न मानने के जैसा है। बपतिस्मा लेने वाले को पता होना चाहिए कि वह पापों की क्षमा *पाने के लिए* बपतिस्मा

ले रहा है।

कई लोग इस बात से सहमत हो गए हैं कि ''के लिए'' का अर्थ पापों की क्षमा पाने ''की दृष्टि से'' है, कुछ लोग यह दावा करने के लिए कि पापों की क्षमा ''बपतिस्मा लेने'' से नहीं बल्कि ''मन फिराने'' से जुड़ी होनी चाहिए व्याकरण की रचना का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु, यहां पर जो रचना है उसका इस्तेमाल मुहावरों के लिए नहीं होता। यूहन्ना 9:3; लूका 8:30; मत्ती 6:19; मरकुस 4:41; 1 कुरिन्थियों 15:50; और याकूब 5:2, 3 में ऐसे ही व्याकरणीय सिद्धांतों का इस्तेमाल हुआ है। ये यूनानी भाषा के नियमों के उल्लंघन नहीं हैं, बल्कि स्थापित मुहावरेदार उपयोग हैं।

बपतिस्मे और पापों की क्षमा के सम्बन्ध को कमजोर करने के बजाय, प्रेरितों 2:38 की संरचना पापों की क्षमा के सम्बन्ध में बपतिस्मे के महत्व पर ज़ोर देती है। यहां पर इस्तेमाल हुए संज्ञा और सर्वनाम से संकेत मिलता है कि, बेशक वक्ता एक समूह को सम्बोधित कर रहा है, परन्तु उसका संदेश समूह के प्रत्येक सदस्य पर लागू होता है। इसके उदाहरण सप्तति अनुवाद में निर्गमन 16:29; यहोशु 6:10; 2 राजा 10:19; और जकर्याह 7:10 में मिलते हैं।

बपतिस्मे को पापों की क्षमा से तोड़ने के बजाय, पतरस और अधिक ज़ोरदार ढंग से इस आवश्यकता को बता रहा था कि उसके सुनने वालों में से *हर एक* बपतिस्मा ले ताकि उनके पाप क्षमा किए जा सकें। बपतिस्मा लेने के महत्व को मिटाने की चाह रखने वाली और व्याख्याएं जो पतरस द्वारा अपने सुनने वालों के पापों की क्षमा के लिए यूनानी अभिव्यक्ति के स्थापित मुहावरेदार ढंग से अन्याय करती हैं।

''पापों की क्षमा *के लिए* बपतिस्मा'' लेने की आज्ञा है। केवल ''बपतिस्मा'' लेने की ही आज्ञा नहीं है। यदि किसी भी कारण के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानने के रूप में बपतिस्मा लेने की ही आज्ञा होती, और ऐसा करके पूरी तरह से आज्ञा मानी जा सकती तो, ऐसा करके आज्ञा ही पूरी होनी थी। परन्तु आज्ञा केवल ''बपतिस्मा लेने'' की ही नहीं है। बपतिस्मा लेने आने वाले पापी का लक्ष्य ''पापों की क्षमा'' होना चाहिए। उसके लिए अपने खोए होने की स्थिति को पहचानना, यीशु को मसीहा ग्रहण करना, शुद्ध करने वाले उसके लहू में विश्वास रखना और उसकी इच्छा को मानकर अपने जीवन को बदलने का निश्चय करना है।

इसके लिए पतरस को पापमयी जीवनों को बदलने के लिए यूहन्ना (मत्ती 3:2), यीशु (मत्ती 4:17) और प्रेरितों के संदेश से इस शर्त के साथ बन्द किया गया था क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट था (मत्ती 10:2, 7)। वह सुसमाचार का प्रचार और विश्वास करने वालों को बपतिस्मा देने की यीशु की आज्ञा का भी पालन कर रहा था (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15, 16)।

1 पतरस 3:21

बाद में लिखे अपने एक पत्र में पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने वाक्य की परिपुष्टि

की, ''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21)।

इस आयत के सम्बन्ध में रॉबर्ट जी. ब्रेचर ने लिखा है,

> ... इससे अनुवाद हो जाता है कि मूलत: ''बपतिस्मा जिसका प्रतिरूप'' क्या है। ''प्रतिरूप'' कोई वस्तु या घटना होती है जिसे किसी पहली वस्तु या घटना का ''रूप'' कहा जाता है। प्रलय का जल बपतिस्मे का ''रूप'' था।
>
> ... *अब तुम्हें बचाता है:* यह *अब* आयत 20 के *बीते समय* का उत्तर देता है। अनुवाद में इसका अर्थ ईमानदारी से लिया जाना चाहिए और बहुत ही स्पष्ट होना चाहिए कि ''बपतिस्मा अब तुम्हें बचाता है।'' निस्संदेह उद्धार देना तो परमेश्वर का ही कार्य है, परन्तु यहां पर *बपतिस्मा* दी गई इसकी व्याख्या के अनुसार उद्धार लाता है।
>
> लेखक एकदम व्याख्या करता है कि किसी को बचाने वाले बपतिस्मे का क्या अर्थ है अर्थात यह शरीर की मैल उतारना नहीं, बल्कि भीतर से आत्मिक अनुभव है।[9]

अरिखिया और निदा ने 1 पतरस 3:20, 21 के विषय में लिखा,

> ''रूप'' ''प्रतिरूप'' की परछाईं होता है, अर्थात यह अब मसीही विश्वास में पूर्ण रीति से प्रकट वास्तविकता का अधूरा संकेत है।
>
> यह जो भी हो, हर हाल में, ''प्रतिरूप'' है, जो अब उन्हें बचाता है।
>
> वचन में *बपतिस्मे* (या पानी के बपतिस्मे) को बचाने वाला माध्यम बनाया जाता है। परन्तु, पूरी आयत को सावधानीपूर्ण पढ़ने से संकेत मिलता है, कि *जो अब तुम्हें बचाता है* उसे शायद *यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा* आयत के अन्त तक जाना चाहिए।[10]

अन्य विचारों के बाद, उन्होंने सुझाव दिया कि इस आयत का अनुवाद करने में, *''अब तुम्हें बचाता है* अभिव्यक्ति के साथ आयत 21 के अन्तिम भाग को जोड़ना ठीक हो सकता है, उदाहरण के लिए, बपतिस्मा लेने से, परमेश्वर अब हमें यीशु मसीह के द्वारा मुर्दों में से जी उठने के कारण बचाता है।''[11]

पतरस का यह वाक्य प्रेरितों 2:38 में उसके वाक्य के साथ मेल खाता है। परमेश्वर के जिस विश्वास से नूह जहाज बनाने के लिए प्रेरित हुआ, मौत के खतरे के कारण (इब्रानियों 11:7) वही विश्वास एक खोए हुए व्यक्ति को उसके विवेक से प्रेरणा देकर यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने से उद्धार की खोज करने को प्रेरित करता है। बपतिस्मा यीशु की मृत्यु तथा जी उठने से उपलब्ध करवाए गए उद्धार के साथ बड़ी ही मजबूती से जुड़ा हुआ है।

1 पतरस 3:21 में एक और विचार ''शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में होने'' की बात है जिसका और बेहतर अनुवाद है ''शुद्ध विवेक के परमेश्वर के वश में होना।''[12] अनुवाद

चाहे कोई भी सही हो, परन्तु विवेक के परमेश्वर के वश में होने की बात हर जगह मिलती है। यदि किसी को इतनी भी समझ नहीं है कि वह किसके लिए प्रार्थना कर रहा है, तो वह कैसे अपनी प्रार्थना कर सकता है? अधिक तर्कपूर्ण ढंग से यह एक पापी द्वारा जिसका विवेक शुद्ध है, अर्थात मसीही बनने से पहले भी जिसका विवेक (प्रेरितों 23:1) कलीसिया को सताने वाले शाऊल की तरह शुद्ध है, (1 तीमुथियुस 1:13) का परमेश्वर के वश में होना। विकृत विवेक से कोई भी व्यक्ति वश में होने के लिए प्रेरित नहीं होगा।

पाप से उद्धार के लिए प्रार्थना का अर्थ यह नहीं कि कोई आज्ञा मानकर अपने ही पापों की क्षमा चाह रहा है। इसका अर्थ यह है कि उसके विवेक ने उसे उद्धार के लिए परमेश्वर के वश में होकर उसके पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की प्रेरणा दी है। केवल बपतिस्मे और पापों की क्षमा में सही सम्बन्ध रखने वाले ही ऐसी प्रार्थना कर सकते हैं।

पतरस ने छुटकारे के यीशु के कार्य का लाभ लेने के लिए विश्वास को मानने के लिए बपतिस्मे को आवश्यक माना। इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि पतरस ने अपने सुनने वालों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी (प्रेरितों 10:48; तुलना 2:38)।

सारांश

पतरस को यीशु द्वारा उसके नाम में उद्धार का प्रचार करने के लिए सबसे पहले शिक्षित किया और चुना गया। यरूशलेम में उसने अपने पहले श्रोताओं को यह अहसास दिलाने में सहायता की कि वे खोए हुए हैं। वे यीशु में विश्वास करके पूछने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए। पतरस ने उन्हें यीशु के पीछे चलने और अपने जीवनों को बदलने के लिए कहा था। जिन्होंने उसका वचन प्रसन्नता से मान लिया था उन्होंने बपतिस्मा लिया, स्पष्टत: इस समझ के साथ कि मन फिराने और यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने से उनके पाप क्षमा हो जाएंगे (प्रेरितों 2:38-41)। यह संदेश केवल उन यहूदियों के लिए नहीं था जिन्हें पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन सिखाया था बल्कि यह शेष संसार के लिए भी है (लूका 24:47)।

पाद टिप्पणियां

[1]रूबल शैली, *आई जस्ट वांट टू बी ए क्रिश्चियन* (नैशविल्ले: 20th सेन्चुरी क्रिश्चियन, 1986), 120-27; जिम्मी ऐलन, *रीबैप्टिज़्म?* (वैस्ट मोनरो, ला.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1991), 41.[2]यह 2 और 3 पाठों में परमेश्वर की इच्छा के प्रत्युत्तर के सिद्धांतों की चर्चा में चौथे सिद्धांत के अनुसार है। [3]बार्कले एम. न्यूमैन एण्ड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांस्लेटर'ज़ हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ अपोस्टल्ज़* (न्यूयार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1972), 60. [4]सी. ऍफ. डी. मयूल, *ऐन ईडियम-बुक ऑफ़ न्यू टैस्टामेन्ट ग्रीक,* (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1953), 60. [5]ए. ओपके, *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट,* सम्पा. गरहर्ड किट्टल, अनु. व सम्पा. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले,में "*eis*" [6]जोसेफ़ हैनरी थेयर, *ए ग्रीक लैक्सीकन ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट*। [7]वहीं। [8]वाल्टर बाडर, *ए ग्रीक इंग्लिश* लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर, 2d ed. rev. विलियम एफ. अर्न्ड्ट, ऍफ़. विल्बर गिंगरिच, एवं फ्रैड्रिक डब्ल्यू डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1979), 229. [9]राबर्ट जी. ब्रेचर, *ए ट्रांस्लेटर'ज़ गाइड टू द*

लैटरज़ फ्राम जेम्स, पीटर, एण्ड ज्यूड (लण्डन: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1984),109. [10]डैनियल सी. अरिखया एण्ड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांस्लेटर 'ज़ हैण्डबुक ऑन द फर्स्ट लैटर फ्रॉम पीटर* (न्यूयार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1980), 119–21.

[11]वहीं। [12]ह्यूगो मॅकार्ड, *न्यू टैस्टामेन्ट* (हेंडरसन, टैनि.: फ्रीड–हार्डमैन कॉलेज, 1988)।